अध्याय-पंचम

शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्याय–पंचम

शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 भूमिका

राष्ट्र की उन्नति घटकों पर निर्भर करती है। इन घटकों में शिक्षा का अपना विशेष महत्वपूर्ण स्थान होता है। इसी कारण शिक्षा उद्देश्यपरक और उपयोगी होना आवश्यक होता है। तथा समयानुसार उसमें परिवर्तन आवश्यक होता है।

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। बालक के सर्वांगीण विकास में भाषा का स्थान महत्वपूर्ण है। यही कारण है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने शिक्षा में गुणवत्ता का स्तर बढ़ाने के लिए माध्यमिक विद्यालयों में बच्चें भाषासंबंधी खासकर मातृभाषा के साथ–साथ हिन्दी भाषा में भी उपलब्धि को प्राप्त करने पर विशेष बल दिया है।

हिन्दी हमारी राजभाषा है। मातृभाषा के साथ–साथ इस भाषा का ज्ञान जरूरी है। यही कारण है कि समूचे भारत में अध्ययन–अध्यापन में इसका समावेश किया गया है। फिर भी हिन्दीभाषी क्षेत्रों की तुलना में अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में अहिन्दी भाषा के संदर्भ में बच्चों को अधिक त्रुटियाँ होती है। जितनी सरलता से अपनी मातृभाषा का प्रयोग करते है उतनी सरलता से हिन्दी भाषा का प्रयोग नही कर पाते।

प्रस्तुत शोधकार्य के अन्तर्गत लेखन कौशल को ध्यान में रखकर कार्य किया। विद्यार्थियों में लेखन कौशल का विकास करना शिक्षक का महत्वपूर्ण दायित्व है। कक्षा में कुछ विद्यार्थियों को लेखन के दौरान कोई त्रुटियाँ नहीं होती है। क्योंकि वे

धाराप्रवाह में लिखने में सक्षम होते है, किन्तु कुछ औसत दर्जे के होते है जिनमें शिक्षक के थोड़े प्रयास से उन्हें लेखन में दक्ष बनाया जा सकता है।

विद्यार्थियों में लेखन कौशल को विकसित करने में होनेवाली त्रुटियों को जानने के लिए लेखन परीक्षण आवश्यक है। अतः इस दृष्टि से लेखन की त्रुटियों के अध्ययन का महत्व अधिक बढ़ जाता है। माध्यमिक स्तर पर इन त्रुटियों का निराकरण अति आवश्यक है।

5.2 परिणाम–

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता द्वारा परिकल्पनाओं के विश्लेषण, व्याख्या करने के बाद निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए।

1. भाषा संबंधी त्रुटियों का हिन्दी भाषा अधिगम उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।
2. भाषा संबंधी व्यावहारिक व्याकरण की त्रुटियों का हिन्दी भाषा अधिगम उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।
3. भाषा संबंधी पत्रलेखन की त्रुटियों का हिन्दी भाषा अधिगम उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
4. भाषा संबंधी निबंध लेखन की त्रुटियों का हिन्दी भाषा अधिगम उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।
5. भाषा संबंधी अनुवाद लेखन की त्रुटियों का हिन्दी भाषा अधिगम उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।
6. बालक एवं बालिकाओं का हिन्दी भाषा अधिगम में होनेवाली त्रुटियों का सार्थक अन्तर पाया जाता है।

7. शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों का हिन्दीभाषा अधिगम में होनेवाली त्रुटियों का सार्थक अन्तर पाया जाता है।

5.3 समस्या कथन –

कक्षा नौवीं के विद्यार्थियों का हिन्दीभाषा अधिगम उपलब्धि में होनेवाली त्रुटियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

5.4 अध्ययन के उद्देश्य –

- भाषा संबंधी त्रुटियों का हिन्दीभाषा अधिगम उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
- भाषा संबंधी व्यावहारिक व्याकरण की त्रुटियों का हिन्दीभाषा अधिगम उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
- भाषा संबंधी पत्रलेखन की त्रुटियों का हिन्दीभाषा अधिगम उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
- भाषा संबंधी निबंध लेखन की त्रुटियों का हिन्दीभाषा अधिगम उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
- भाषा संबंधी अनुवाद लेखन की त्रुटियों का हिन्दीभाषा अधिगम उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
- बालक एवं बालिकाओं का हिन्दीभाषा अधिगम में होने वाली त्रुटियों का अन्तरज्ञात करना।
- शहरी एवं ग्रामीण विद्याथियों का हिन्दीभाषा अधिगम में होने वाली त्रुटियों का अंतरज्ञात करना।
- हिन्दीभाषा अधिगम में होनेवाली त्रुटियों की सूची बनाना।

5.5 अध्ययन की परिकल्पना–

1. भाषा संबंधी त्रुटियों का हिन्दीभाषा अधिगम उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं होगा।
2. भाषा संबंधी व्यावहारिक व्याकरण की त्रुटियों का हिन्दीभाषा अधिगम उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं होगा।
3. भाषा संबंधी पत्रलेखन की त्रुटियों का हिन्दीभाषा अधिगम उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं होगा।
4. भाषा संबंधी निबंधलेखन की त्रुटियों का हिन्दीभाषा उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं होगा।
5. भाषा संबंधी अनुवाद लेखन की त्रुटियों का हिन्दीभाषा अधिगम उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं होगा।
6. बालक एवं बालिकाओं का हिन्दीभाषा अधिगम में होनेवाली त्रुटियों का सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।
7. शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों का हिन्दीभाषा अधिगम में होनेवाली त्रुटियों का सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

5.6 समस्या का सीमाकंन –

- यह अध्ययन नौवीं कक्षा के विद्यार्थियों पर किया गया है।
- इस अध्ययन में महाराष्ट्र से जलगांव जिले के एंरडोल तहसील के माध्यमिक शालाओं को ही सम्मिलित किया गया हैं।
- इस अध्ययन में उपरोक्त 4 माध्यमिक शालाओं में से केवल 82 विद्यार्थियों को ही शामिल किया गया हैं।
- प्रस्तुत शोधकार्य में लेखन कौशल को लेकर कक्षा नौवी की हिन्दी भाषा पाठ्यपुस्तक में से व्यावहारिक व्याकरण, पत्रलेखन,

निबंधलेखन, अनुवादलेखन, के आधार पर विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

5.7 प्रयुक्त चर–

स्वतंत्र चर

- ग्रामीण एवं शहरी बालक एवं बालिकाऐं.
- कक्षा–नौवीं के विद्यार्थी

आश्रित चर

- हिन्दी भाषा उपलब्धि
- होने वाली त्रुटियाँ
- स्थान

5.8 न्यादर्श के चयन–

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु न्यादर्श के लिए महाराष्ट्र राज्य के एरंडोल तहसील के चार विद्यालय (शहरी और ग्रामीण) लिये गये हैं। एरंडोल तहसील में कुल शहरी विद्यालय 16 तथा ग्रामीण विद्यालय 25 हैं। उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श विधि द्वारा चार विद्यालय पसन्द किये गये हैं।

1. इस शोध कार्य के अंतर्गत चार विद्यालय के कुल 82 विद्यार्थियों को चयनित किया गया।
2. न्यादर्श के रूप में कक्षा नौवीं के विद्यार्थियों को चुना गया जिसमें 41 छात्र तथा 41 छात्राओं को लिया गया।

5.9 सुझाव–

- **छात्र एवं छात्राओं को सुझाव**

1. शाला में दिया हुआ गृहकार्य नियमित रूप से करना चाहिए ताकि लेखन कौशल का विकास हो सकें।
2. पाठ का वाचन क्रमशः करना चाहिए।
3. भिन्न–भिन्न प्रकार की स्पर्धाओं में हिस्सा लेना चाहिए।

- **शिक्षकों को सुझाव**

1. लेखन से संबंधित गृहकार्य देना चाहिए तथा प्रत्येक विद्यार्थी की उत्तरपुस्तिका में वर्तनी की अशुद्धियों की जाँच करनी चाहिए तथा अंकों को शब्दों मे लिखकर अभ्यास करवाना चाहिए।
2. भाषासंबंधी खेलों का आयोजन किया जाये जैसे शब्द निर्माण का खेल, अंत्याक्षरी, समस्या समाधान आदि इससे विद्यार्थियों का शब्द भंडार विकसित होता है।
3. कक्षा स्तर पर हिन्दी शुद्धलेखन पर विद्यार्थियों को प्रोत्साहन देना चाहिए।

- **पालक के सुझाव**

1. घर के माता–पिता द्वारा हिन्दीभाषा बालकों के साथ व्यवहार में लायी जानी चाहिए।
2. माता–पिता द्वारा बच्चों को 'सुन्दर लेखन की आदत डालनी चाहिए।

5.10 भावी शोध हेतु सुझाव

1. इस प्रकार का शोधकार्य अन्य भाषाओं में भी किया जाना चाहिए।
2. विद्यार्थियों की विभिन्न प्रकार की कौशलों में कठिनाईयों का पता लगाकर शिक्षकों द्वारा उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था करके अध्ययन करना चाहिए।

5.11 शैक्षिक उपयोग

1. भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। इसलिए विद्यार्थियों की भाषा में दक्षता का प्रभाव उनके अन्य विषयों पर भी पड़ता है। अतः भाषा के अध्यापन पर ही बालकों की सफलता निर्भर है।
2. माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में सीखने की तीव्रता होती है। लेखन में रूचि लेते है। इसलिए इस स्तर पर लेखन पर ध्यान देना चाहिए।
3. लेखन एक ऐसा उपकरण का साधन है जिससे सम्पूर्ण मानवता के बन्धुत्व के भाव विकसित किए जा सकते है। अतः भाषा शिक्षण में माता-पिता को बच्चें के लेखन की ओर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।
4. शिक्षा के सर्वव्यापीकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए भाषा सशक्त भूमिका निभा सकती है। अतः बालकों में लेखन कौशल का विकास अनिवार्य दायित्व माना जाना चाहिए।